17

योनातन: ज़रूरत के समय काम आने वाला मित्र

(1 शमूएल 17-23; 2 शमूएल 1)

''मित्रता'' या दोस्ती किसी भी भाषा का एक बहुत मूल्यवान शब्द है। रॉबर्ट लूईस स्टीवनसन ने कहा था, ''दोस्त वह उपहार होता है जो आप अपने आप को देते हैं।''[1] मेरी मिटफोर्ड ने लिखा है, ''प्रतिदिन के भोजन से कहीं अधिक मैं मित्रों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करती हूं, ज़्योंकि मित्रता मन का भोजन है।'' सिसेरो ने भी माना कि दोस्ती का छिनना सूर्य की दुनिया लुटने जैसा है। नीतिवचन की व्यावहारिक पुस्तक मित्रता के बारे में काफी कुछ कहती है: ''मित्र सब समयों में प्रेम रखता है'' (नीतिवचन 17:17)। ''ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है'' (नीतिवचन 18:24)। ''जो तेरा ... मित्र हो उसे न छोड़ना'' (नीतिवचन 27:10)।

''मित्रता'' शब्द सुनकर आपके मन में कौन व्यक्ति आता है? शायद आपके ध्यान में वह व्यक्ति आता होगा जिसे आप काफी समय से जानते हैं और जिससे आपके निकट सम्बन्ध रहे हैं। शायद आपके मन में वह व्यक्ति आता होगा जिसकी दयालुता और दिलचस्पी से आपके जीवन में एक नया मोड़ आ गया। शायद आपके ध्यान में परिवार का वह सदस्य आता है जो आपको खून के रिश्ते से भी अधिक प्रिय लगता हो। मैं जब ''मित्र या दोस्त'' शब्द सुनता हूं, तो मेरे ध्यान में सबसे पहले मेरी पत्नी, जोअ आती है। जोअ संसार में मेरी सबसे अच्छी दोस्त है (नोट श्रेष्ठगीत 5:16)। फिर मेरे ध्यान में मेरे माता-पिता, मेरा भाई, और परिवार के दूसरे लोग आते हैं। फिर मुझे उन सब मित्रों का ध्यान आता है जो संसार भर में फैले हुए हैं। मुझे स्वर्ग में जाने की एक खुशी इसलिए होगी ज़्योंकि हम सबसे बड़े मित्र के प्रेम से घिरे सब मित्र एक जगह एक ही समय में होंगे।

अफसोस कि ''मित्रता'' शब्द सुनकर कई लोगों को कोई मित्र ही नहीं दिखाई देता।[2] यदि आपके साथ ऐसा है, तो मेरा मन आपके लिए रोता है। मुझे आशा है कि इस पाठ अध्ययन करने वाले हर व्यक्ति को इससे सहायता मिलेगी; मेरी विशेष तौर पर यह आशा है कि यदि आप अपने आप को मित्रहीन समझते हैं तो आपकी सहायता के लिए भी इसमें कुछ मिल जाएगा।

मैं प्रश्न को बदल देता हूं। जब मैं ''मित्रता *तथा बाइबल*'' की बात करता हूं तो आपका ध्यान किसकी ओर जाता है? शायद आप योनातन और दाऊद के बारे में सोच रहे हैं। हमारे बच्चों की कक्षाओं में मित्रता के बारे में पढ़ाते हुए निश्चय ही इस विचार को समझाने के लिए बाइबल से चुनी जाने वाली कहानी शाऊल राजा के पुत्र और बैतलहम के चरवाहे लड़के की मित्रता के बारे में ही बताया जाता है।

इस और अगले पाठ में हम देखेंगे कि दाऊद रातों-रात प्रसिद्ध व्यक्ति बन जाता है और जितनी जल्दी से उसे प्रसिद्धि मिलती है, उतनी ही जल्दी उसके शत्रु भी बन जाते हैं। परन्तु इस पाठ में हम देखेंगे कि पवित्र शास्त्र के इस भाग में दाऊद के लिए योनातन के प्रेम की कहानी एक सुनहरी धागा है। इसमें हम सच्ची दोस्ती के बारे में जानेंगे।

दोस्ती का समर्पण
(1 शमूएल 17:55-18:3)

आज के पाठ की पृष्ठभूमि 1 शमूएल 17 अध्याय की अंतिम चार आयतों में मिलती है जिसमें हम गोलियत पर दाऊद की विजय का स्मरण करते हैं। उस दानव का सामना करने के लिए दाऊद के शाऊल के पास से जाने के बाद राजा ने अपनी सेनाओं के कमांडर से पूछा, ''हे अब्नेर, यह जवान किसका पुत्र है?'' (17:55)। दाऊद की विजय के बाद, अब्नेर इस जवान चरवाहे को शाऊल के सामने लेकर आया। जब दाऊद अपने हाथ में गोलियत का सिर लिए उसके सामने खड़ा था, तो राजा ने उससे पूछा, ''हे जवान, तू किस का पुत्र है?'' (17:58क)।[3] दाऊद ने जवाब दिया, ''मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूं'' (17:58ख)। ध्यान दें कि शाऊल ने यह नहीं पूछा था कि दाऊद कौन है बल्कि उसने उसके पिता का नाम पूछा था।[4] शाऊल यह जानकारी इसलिए लेना चाहता होगा ताकि वह उसके पिता से दाऊद को अपने परिवार में मिलाने की अनुमति ले सके। ''और उस दिन से शाऊल ने उसे अपने पास रखा और पिता के घर को फिर लौटने न दिया'' (18:2)।[5]

जब शाऊल दाऊद को अपने महल में रहने का निमन्त्रण देने की बात कर रहा था, तो राजा के पास खड़ा एक नौजवान यह सब सुन रहा था। उस नौजवान का नाम योनातन था।[6] वह शाऊल का सबसे बड़ा बेटा तथा उसकी गद्दी का उज़राधिकारी था। वह राजा का दाहिना हाथ, अर्थात एक बहादुर सैनिक अगुआ था जिसने इस्राएल के हर ओर विरोधी कबीलों से कई युद्ध लड़कर अपना लोहा मनवा लिया था (1 शमू. 13; 14)। उसने इस्राएलियों के मन में विशेष जगह बना ली थी (1 शमू. 14:45)।

दाऊद को उस दानव का सामना करते हुए देखने के बाद घाटी के उस पार देखकर योनातन के अपने पिता के सामने आने पर कुछ बहुत ही अलग और अच्छी बात हुई। ''जब वह [अर्थात दाऊद] शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातन का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातन उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा'' (18:1)। अनुवादित इब्रानी शब्द ''मन लग गया'' का मूल अर्थ ''के साथ बंध गया'' है। इसके तुरन्त बाद उनके जीवन एक दूसरे से जुड़ गए, परन्तु उससे भी बड़ी बात यह हुई कि उनमें एक बंधन स्थापित

हो गया। इस प्रकार संसार की सबसे सुन्दर मित्रताओं में से एक का जन्म हुआ।

यह एक असज़्भावित सज़्बन्ध था। पहले तो उनकी उम्र में कम से कम बीस वर्ष का अन्तर था। दाऊद के जन्म के समय योनातन एक मझा हुआ योद्धा था। दूसरा, उनकी सामाजिक स्थिति में भी अन्तर था। योनातन राजकुमार था, जबकि दाऊद बैतलहम के एक निर्धन किसान का बेटा था। परन्तु जब दिल मिल जाते हैं तो ऐसी बातों का कोई अर्थ नहीं रहता। आज के समाज में हम बहुत से लोग पीढ़ी तथा सामाजिक अन्तरों को जन्म दे रहे हैं। यदि हम केवल अपनी उम्र या अपनी पसन्द के लोगों को ही मित्र बनाना चाहते हैं, तो हमें कितनी अच्छी मित्रता से हाथ धोना पड़ेगा!

योनातन और दाऊद की एक दूसरे के प्रति *वचनबद्धता* पर ध्यान दें: ''तब योनातन ने दाऊद से वाचा बांधी, ज़्योंकि वह उसको अपने प्राण के बराबर प्यार करता था'' (18:3)। वाचा दो पक्षों के बीच हुए समझौते (1 शमू. 18:3 की तुलना 1 शमू. 20:16 से करें) को कहा जाता है। इस वाचा की पेशकश योनातन द्वारा की गई थी, कुछ तो इसलिए ज़्योंकि उसी ने दाऊद के साथ सज़्बन्ध बनाने की ज़रूरत महसूस की थी और कुछ इसलिए ज़्योंकि एक अधीन व्यज़्ति के रूप में दाऊद के लिए यह सुझाव देना अनुपयुज़्त होना था।[7] परन्तु शज़्द की प्रकृति से संकेत मिलता है कि यह मित्रता एकतरफा नहीं थी; दाऊद भी योनातन से प्यार करता था (1 शमू. 20:41; 2 शमू. 1:26 आदि)।

यह वाचा कैसे बंधी थी? किसी ने सुझाव दिया है कि चीज़ों के अदल-बदल, दावत और एक दूसरे का लहू मिलाने से एक बड़ा समारोह हुआ था। (शायद आपने अपने और अपने मित्र को ''मुंह बोला भाई'' बनाने के लिए दोनों के अंगूठे में से लहू निकालकर उसे मिलाने का समारोह किया हो)। परन्तु अधिक सज़्भावना यह है कि जैसे मित्र बनाने के लिए होता है, दोनों ने एक दूसरे से (परमेश्वर के नाम से[8]) प्रतिज्ञा ली होगी (देखें 1 शमू. 20:16)।

जैसे भी हो, परन्तु यह वाचा एक दूसरे के समर्पण को दिखाती थी। सच्ची मित्रता के लिए तंगी या खुशहाली की हर स्थिति में मित्रों का एक दूसरे के प्रति समर्पण होना आवश्यक है। इसके अलावा सच्ची मित्रता में वह समर्पण बार-बार दोहराया जाता है। दाऊद और योनातन की कहानी में आगे हम देखेंगे कि वे एक दूसरे के साथ अपनी वाचा को कई बार फिर से नया करते रहते हैं:

> इस प्रकार योनातन ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा बंधाई, कि यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले। और योनातन दाऊद से प्रेम रखता था, और उसने उसको फिर शपथ खिलाई; ज़्योंकि वह उससे अपने प्राण के बराबर प्रेम रखता था (1 शमूएल 20:16, 17)।

> कि शाऊल का पुत्र योनातन उठकर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया। ... तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा बांधी (1 शमूएल 23:16, 18)।

सैमूएल जॉन्सन ने कहा था, ''इनसान को अपनी दोस्ती की मरज़्मत करते रहना चाहिए।'' मित्रता या दोस्ती को यूं ही न मान लें। इसे समय-समय पर नये सिरे से दोहराते रहना आवश्यक है, चाहे वे दो बिज़नेस पार्टनर, दो शिकारी या पति-पत्नी हों। कुछ साल पहले, एक टीवी विज्ञापन में हर पति को अपनी पत्नी के लिए ''उसे यह बताने के लिए कि आप दोबारा उसी से शादी करना चाहेंगे'' हीरे का हार खरीदकर देने के लिए कहा गया था। हीरे के आभूषण ज़रूरी नहीं हैं, ज़रूरी तो आपको अपने प्रेम की फिर से पुष्टि करना है।

मित्रता की निः स्वार्थता (1 शमूएल 18:4)

दाऊद के साथ वाचा बांध लेने के बाद, ''योनातन ने अपना बागा जो वह स्वयं पहिने था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन अपनी तलवार और धनुष और कटिबन्द भी उसको दे दिया'' (18:4)। यह ढंग अभूतपूर्व था। बागा और वस्त्र दोनों ही योनातन की शाही पोशाक थे। हथियारों का भी अपना विशेष महत्व था। इस्राएली सेना में तलवार हर किसी के पास नहीं होती थी।[9] धनुष योनातन की पहचान थी।[10] यदि यह समारोह सार्वजनिक था (जैसा कि लगता है), तो इसमें संदेह नहीं कि शाऊल और वहां उपस्थित लोग भौंचज़्के रह गए होंगे।

योनातन ने दाऊद को ये चीज़ें ज़्यों दीं? शायद इसके पीछे कई प्रेरणाएं थीं। योनातन इस बात को समझ गया होगा कि दाऊद को कपड़ों और हथियारों की आवश्यकता है। ज़्योंकि दाऊद को अपने पिता के घर लौटने की अनुमति नहीं थी (1 शमूएल 18:2), उसके पास केवल तन के कपड़े ही थे। पुन: यह सज़्भव है कि यह समारोह योनातन और दाऊद के बीच होने वाली वाचा पर मोहर लगाने के लिए था (1 शमूएल 18:3)।[11]

परन्तु मुझे लगता है कि इन उपहारों का इससे कहीं अधिक गहरा अर्थ था। आइए गोलियत से युद्ध की जगह चलते हैं। हमने पहले ध्यान दिया था कि शाऊल गोलियत के साथ लड़ने के लिए उपयुज़्त व्यज़्ति था, परन्तु उसने उसके साथ युद्ध नहीं किया ज़्योंकि वह डरता था। अगला उपयुज़्त व्यज़्ति कौन था? किसने युद्ध में अपना लोहा मनवाया था और अपनी बहादुरी तथा शूरवीरता के कारण प्रसिद्ध था? ज़्या वह भी अपने पिता और दूसरे लोगों की तरह डर गया था? योनातन के स्वभाव से तो ऐसा नहीं लगता। बल्कि सुझाव दिया गया है[12] कि योनातन के मन में अपने पिता के प्रति सज़्मान नहीं रहा था; उसे अपने पिता की गद्दी पर बैठने की उज़्मीद नहीं थी; यह कि वास्तव में इस्राएल कौम में उसकी उज़्मीद मिट चुकी थी; कि वह डरकर या निराश होकर पीछे नहीं हटा था। परन्तु उस पलिश्तीनी से युद्ध करने के लिए दाऊद के घाटी पर कदम रखने से योनातन के मन में एक नई आस जग गई थी। दाऊद को अच्छी तरह जान लेने पर उसकी उज़्मीद बढ़ गई थी। उसे उसमें सिंहासन पर बैठने के योग्य आदमी दिखाई दिया, जो इस्राएल के भविष्य को सुनिश्चित कर सकता था!

यदि यह विश्लेषण सही है तो योनातन के उपहारों का सांकेतिक महत्व था। वास्तव में योनातन दाऊद से कह रहा था, ''मैं सिंहासन का अपना अधिकार तुम्हें देता और तुम्हारा समर्थन करने की शपथ लेता हूं!'' नि:संदेह योनातन और दाऊद के सम्बन्ध की बाद की घटनाएं इस समारोह की इस व्याख्या से मेल खाती हैं (1 शमू. 23:17 इत्यादि)।हमारे लिए इस बात को समझ पाना कठिन होगा कि योनातन को इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ी। ऐसी नि:स्वार्थता न तो पवित्र शास्त्र में और न कभी जीवन में दोहराई गई है।

नि:स्वार्थता मित्रता का एक स्वाभाविक भाग है। बिना बलिदान किए सच्ची मित्रता नहीं हो सकती। बाद में योनातन ने दाऊद से कहा, ''*जो कुछ* तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिए करूंगा'' (1 शमूएल 20:4)। सच्चे मित्र ऐसे ही होते हैं, और सच्चे मित्र हिसाब नहीं रखते कि किसने ज्यादा किया। प्रभु ने जोअ को और मुझे ऐसे सैकड़ों मित्रों से आशीषित (करके विनम्र) किया है। हमारे घर की हर चीज़ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी न किसी मित्र द्वारा दिया गया उपहार है और उसके पीछे कोई न कोई कहानी है। हम अपने घर में से गुज़रते हुए, तस्वीरों, चित्रों तथा अन्य सुन्दर वस्तुओं को देखते हुए, फर्नीचर को छूते हुए, बहुमूल्य मित्रता को स्मरण रख सकते हैं।

मित्रता की परीक्षा
(1 शमूएल 18:5-19:7)

कभी न कभी, मित्रता की परीक्षा अवश्य होती है। पक्की दोस्ती तूफ़ानों में से निकलने के बाद ही पता चलती है। योनातन और दाऊद की दोस्ती पर कठिन परीक्षा आने में देर नहीं लगी।

दाऊद को शाऊल के घर में पहली बार स्वीकार किए जाने के समय वह राज दरबार में हरमन प्यारा था। रातों रात, चरागाह का एक गुमनाम व्यक्ति देश के सबसे प्रसिद्ध लोगों में शामिल हो गया था (1 शमू. 18:5, 16, 30)। परन्तु राजा के लिए उसकी प्रसिद्धि तेज़ी से गायब होने वाली चीज़ थी। एक दिन जब शाऊल अपनी सेना के साथ एक सैनिक विजय के बाद लौट रहा था, तो स्त्रियां उसके स्वागत में गाने लगीं, ''कि शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है'' (18:7)। तभी से, शाऊल के मन में दाऊद के प्रति प्रेम (1 शमू. 16:21) खत्म होने लगा और उसकी जगह एक रोगात्मक द्वेष ने ले ली।

शाऊल का द्वेष शीघ्र ही हत्यारे मन में परिवर्तित हो गया। उसने दाऊद को मारने के लिए एक के बाद एक षड्यंत्र रचे, परन्तु उसका एक भी षड्यंत्र सफल नहीं हुआ। दाऊद का विनाश करने के बजाय हर षड्यंत्र के बाद दाऊद की प्रसिद्धि और सम्मान बढ़ा ही (1 शमू. 18:30)। अंतत: शाऊल अवसर की तलाश में रहने लगा। उसने अपने आस-पास के प्रमुख लोगों जिनमें उसका अपना बेटा योनातन भी था, को इकट्ठा किया और उन्हें ''दाऊद को मार डालने'' (19:1) की आज्ञा दी। क्या आप उनमें से हर एक के चेहरे पर छाए आश्चर्य तथा आतंक की कल्पना कर सकते हैं? दाऊद एक राष्ट्रीय नायक था!

एक पल के लिए अपने आप को योनातन की जगह पर रखें, जिसमें आप अपने पिता

के प्रति वफ़ादारी और अपने मित्र के लिए प्रेम के बीच में फंसे हैं। योनातन और दाऊद की मित्रता में आने वाली बहुत सी परीक्षाओं में से यह पहली थी।

योनातन ने दाऊद को सतर्क करके उसे छिप जाने के लिए कहा (19:2, 3)। योनातन ने अपने मित्र को अपने पिता से बचाने का निश्चय कर लिया। ऐसा करके योनातन अपना प्राण जोखिम में डाल रहा था; ज़्योंकि राजा के क्रोध के सामने राजा का बेटा भी नहीं बच सकता था (तु. 1 शमू. 14:44)। परन्तु एक सच्चा मित्र किसी हाल में भी अपने मित्र के नाम की बदनामी नहीं होने देगा, इसके लिए चाहे उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

अगले दिन सुबह जब शाऊल और योनातन टहल रहे थे तो योनातन ने राजा के सामने मन की बात कही:

> हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो; ज़्योंकि उसने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, वरन उसके सब काम तेरे बहुत हित के हैं;[13] उसने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला, और यहोवा ने समस्त इस्राएलियों की बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी ज़्यों बने[14] (19:4, 5)।

यह खिन्न करने वाला क्षण था: योनातन आंखों में आंसू लिए बिनती कर रहा था जिस कारण अहंकारी राजा का मन थोड़ी देर के लिए पिघल गया। ''तब शाऊल ने योनातन की बात मानकर यह शपथ खाई, कि यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा'' (19:6)। खुश होकर योनातन दाऊद को महल में ले आया (19:7)।

कहावत है: ''दोस्त वही जो मुसीबत में काम आए।'' अंग्रेज़ी में इसे ''A friend in need is a friend in deed''। कहते हैं अर्थात ज़रूरत के समय काम आने वाला ही सच्चा दोस्त होता है। जब मैंने नई-नई अंग्रेज़ी सीखी थी तो यह कहावत मेरी समझ में नहीं आती थी। मुझे लगता था कि ''a friend in need'' का अर्थ ''दोस्त जिसे ज़रूरत *हो*'' होता है। मुझे समझ नहीं आती थी कि a friend in need अर्थात ज़रूरतमंद दोस्त ''a friend indeed'' कैसे हो सकता है। बहुत देर बाद मुझे समझ आने लगा कि ''a friend in need'' का अर्थ मेरे मित्र की ज़रूरत नहीं बल्कि *मेरी* ज़रूरत है। जो तब भी मेरा मित्र होगा जब मेरी परिस्थितियां बहुत खराब हों, जब मेरे पास देने के लिए कुछ न हो, वही ''a friend indeed'' होगा। हम में से हर कोई ऐसे ही मित्र चाहता है, ऐसे ही मित्रों की हमें आवश्यकता है, और योनातन ऐसा ही मित्र था। दाऊद को कोई ऐसा आदमी चाहिए था जो उसे सहारा दे सके और योनातन ने उसे सहारा दिया।

मित्रता की निष्कपटता
(1 शमूएल 19:8-20:42)

दाऊद को महल में लौटे अधिक समय नहीं हुआ था कि शाऊल ने दाऊद को मारने की कोशिश न करने की वाचा तोड़कर[15] एक भाले से उसकी हत्या करने का प्रयास किया

(जैसा उसने दो बार किया था)। उस कांपते हुए भाले को वेग से दीवार में धंसा देखकर दाऊद समझ गया था कि उसका ज़्या अर्थ है। वह रात को ही वहां से भाग गया।

पहले तो वह अपने[16] और फिर शमूएल के घर गया जिसने उसे कई साल पहले राजा के रूप में अभिषेक किया था। परन्तु शाऊल ने उसकी हत्या करने के लिए तीन दल भेजे और अंत में खुद भी आ गया। परमेश्वर ने उन भेजे हुओं और शाऊल पर अपना आत्मा भेज कर हस्तक्षेप किया। दाऊद के फिर हाथ से निकल जाने पर, शाऊल भूमि पर गिरकर बुड़बुड़ाने लगा।[17]

जब शाऊल थोड़ी देर के लिए पंगु बना हुआ था, तो दाऊद अपने मित्र योनातन से मिलने के लिए गिबा में चला गया। योनातन को उसके और शाऊल के बीच फिर मध्यस्थता करने की उम्मीद होगी। दाऊद ने योनातन के सामने अपने मन की बात कह दी। ''मुझ से ज़्या पाप हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है?'' (1 शमूएल 20:1)।

योनातन को विश्वास नहीं हुआ कि शाऊल ने फिर दाऊद की हत्या करने की कोशिश की थी (20:2)। उसके पिता ने तो कहा था कि ''यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा'' (19:6)।

दाऊद ने ज़ोर देकर कहा कि यही सत्य है, ''यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, नि:संदेह, मेरे और मृत्यु के बीच डग भर का ही अन्तर है'' (20:3)।

दाऊद के मन में एक योजना थी। योजना का मुज़्य उद्देश्य यह लगता है कि वह योनातन को विश्वास दिलाना चाहता था कि वह सताव के भय से ग्रस्त नहीं है। उसके लिए अपने और योनातन का सम्बन्ध सर्वोपरि था (20:8)।[18] उसने अपने मित्र से कहा, ''सुन कल नया चांद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूं'' (20:5)। व्यवस्था के अनुसार महीने में एक विशेष दिन विश्राम के लिए ठहराया गया था (गिनती 28:11-15)। स्पष्टतया, शाऊल इन अवसरों का इस्तेमाल अपनी सरकार के प्रमुख व्यक्तियों योनातन, अब्नेर और दाऊद के साथ ''मंत्रिमंडल की बैठक'' के लिए करता था (1 शमू. 20:25)। दाऊद ने आगे कहा:

> यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिंता करे, तो कहना, कि दाऊद ने अपने नगर बेतलेहेम को शीघ्र जाने के लिए मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी है; ज़्योंकि वहां उसके समस्त कुल के लिए वार्षिक यज्ञ है।[19] यदि वह यों कहे, कि अच्छा! तब तो तेरे दास के लिए कुशल होगा; परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भड़क उठे, तो जान लेना कि उसने बुराई ठानी है (20:6, 7)।

योनातन बड़ा परेशान हुआ और उसने दाऊद के साथ शपथ खाई:

> ... इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ, जब मैं कल वा परसों इसी समय अपने पिता का भेद पाऊं, तब यदि दाऊद की भलाई देखूं, तो ज़्या मैं उसी समय

> तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊंगा? यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूं कि तू कुशल के साथ चला जाए, तो यहोवा योनातन से ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे और यहोवा तेरे साथ ... रहे ... (20:12, 13)।[20]

यदि शाऊल ने राज्य की सारी सरकारी मशीनरी दाऊद को मारने में झोंक दी थी तो केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता था।

बदले में योनातन ने दाऊद के सामने खुलकर अपने मन का विश्वास तथा भय बता दिया। इस बात से आश्वस्त कि परमेश्वर दाऊद के साथ होगा और अगला राजा दाऊद ही बनेगा, योनातन ने पूछा:

> और न केवल जब तक मैं जीवित रहूं [जब तू राजा बने],[21] तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसा करना, कि मैं न मरूं;[22] परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपा दृष्टि कभी न हटाना। वरन जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नाश कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना (20:14, 15)।

जहां तक बाइबल बताती है योनातन ने दाऊद से केवल यहीं पर बिनती की थी। दाऊद मान गया,[23] और दोनों मित्रों ने एक दूसरे के प्रति अपनी वचनबद्धता फिर नये सिरे से दोहराई (20:16, 17)।

एक काम दाऊद ने करना था। योनातन दाऊद को शाऊल की योजना के बारे में कैसे बता सकता था जब कि राजा के जासूस हर जगह मौजूद थे? योनातन ने एक सुझाव दिया: तीन दिन बाद, दाऊद को पहले वाली जगह पर निकट के खेत में छिपना था। योनातन ने अज़्यास के लिए वहां तीर चलाना था। उसके तीर चलाने के ढंग तथा सेवक को दिए गए निर्देशों से यह संकेत मिलना था कि खबर अच्छी है या बुरी।

दाऊद से अलग होते हुए, योनातन ने कहा, ''यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे'' (20:23)।

अगले दिन शाऊल, योनातन और अज़्नेर भोजन करने बैठे थे, ''परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा'' (20:25)। पहले दिन शाऊल ने सोचा शायद दाऊद औपचारिक या शारीरिक रूप से अशुद्ध होगा[24] (औपचारिक अशुद्धता से शुद्ध होने के लिए एक दिन लगता था [लैव्य. 15:16–23; व्यवस्था. 23:10, 11])। परन्तु जब दाऊद दूसरे दिन भी न आया, तो शाऊल को शक हो गया। यदि किसी को मालूम था कि दाऊद कहां है तो वह योनातन ही था। ''और शाऊल ने अपने पुत्र योनातन से पूछा, ज़्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही आया है'' (20:27)।

योनातन ने शाऊल से वही कहा जो दाऊद ने उसे बताया था, और साथ कुछ और बातें लगा दीं (20:28, 29)।

शाऊल गुस्से में आ गया। उसका ''कोप योनातन पर भड़क उठा'' (20:30क)। वह

अपने बेटे पर चिल्लाने लगा:

> हे कुटिला राजद्रोही के पुत्र,[25] ज़्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन तो यिशै के पुत्र[26] पर लगा है? इस से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा।[27] ज़्योंकि जब तक यिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिए अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, ज़्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा (20:30ख, 31)।

शाऊल के कहने का अर्थ था कि दाऊद पर देशद्रोह का आरोप है इसलिए वह मृत्यु दण्ड के योग्य है। आंखों में शोले और मन में किसी की हत्या के विचार वाले राजा के सामने खड़ा होना समझदारी नहीं थी, परन्तु योनातन अपने मित्र की बुराई सहन नहीं कर पाया। योनातन ने पूछा, ''वह ज़्यों मारा जाए? उसने ज़्या किया है?'' (20:32)।

शाऊल अपने आप से बाहर हो गया। तीन बार उसने भाले से दाऊद को मारने का यत्न किया था। अब उसने अपना भाला अपने ही बेटे पर उठा लिया (20:33)!

योनातन कुछ पल के लिए क्रोध से कांपता हुआ बैठ गया, और फिर उठकर कमरे की ओर भाग गया (20:34)। वह अपने पिता को अपनी हत्या करने का दूसरा अवसर नहीं देना चाहता था। उसे शायद यह भी लगता था कि कहीं अपने पिता पर उसका हाथ न उठ जाए।

योनातन निराशा से भर गया।[28] उसके मन का सारा भ्रम दूर हो गया था। दाऊद ने सही कहा था कि उसके पिता ने उसके दोस्त को मार डालने की ठान ली है।

अगली सुबह योनातन दाऊद से मुलाकात करने के लिए भारी मन से गया। यह दिखाने के लिए कि सब कुछ सामान्य है, वह हथियार उठाने और तीर ढूंढ़कर लाने के लिए एक सेवक को अपने साथ ले गया। उस जगह पर पहुंचकर उसने कई तीर चलाए और फिर उन्हें लाने के लिए उस लड़के को भेजा। उसने लड़के से पुकारकर कहा, ''तीर तो तेरी परली ओर है'' (20:37)। यह पहले ही ठहराए हुए के अनुसार दाऊद के लिए संकेत था जिसका अर्थ यह था कि शाऊल ने ठान लिया है कि दाऊद को मार डाले और दाऊद के पास भाग जाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है।

कमान में तीर चढ़ाते हुए बार-बार उसकी आंखें इधर-उधर घूम रही थीं कि कहीं शाऊल का कोई जासूस उसे न देख रहा हो।[29] अंत में इस बात से संतुष्ट होकर कि कोई आस-पास नहीं है, योनातन ने उस सेवक को कहा कि उसने काफ़ी अज़्यास कर लिया है इसलिए अब वह नगर को चला जाए (20:40)।

जैसे ही वह सेवक आंखों से ओझल हुआ, दाऊद छुपने के स्थान से बाहर आया,[30] उसके चेहरे पर मायूसी छाई हुई थी। उसे और योनातन दोनों को बिना कुछ कहे इस संदेश का अर्थ मालूम था। वह रुक नहीं सकता था और योनातन उसके साथ जा नहीं सकता था। योनातन का पिता गलत था, परन्तु था तो वह उसका पिता और वफ़ादारी की मांग यही थी कि वह अपने पिता के साथ रहे।

दोनों मित्रों के एक दूसरे के मिलने का दृश्य दिल दहला देने वाला था,[31] जिसमें वे

दोनों ज़ोर-ज़ोर से रोए। आयत 41 कहती है, वे ''... एक दूसरे के साथ रोए, परन्तु दाऊद का रोना अधिक था।''

किसी ने कहा है, ''मित्र ऐसा व्यक्ति होता है जिससे आप हर बात कर सकते हैं।''[32] अध्याय 20 में हमने देखा कि दाऊद ने योनातन से अपने दिल की बात कही। हमने यह भी देखा कि योनातन ने ईमानदारी से अपना भय प्रकट किया और दाऊद से शपथ ली। अब हम उन्हें अर्थात मर्दों और कई युद्धों में विजय पा चुके शूरवीरों को मिलकर रोते हुए आंसू बहाते देखते हैं। (''सच्चे लोग'' रो लेते हैं।) निष्कपटता सच्ची मित्रता की सुन्दरता है। आप किसी सच्चे मित्र से खुलकर स्पष्ट बात कर सकते हैं और वह आपकी बात को मानेगा। सच्चा मित्र आपकी कमियों को जानने के बावजूद आपसे प्रेम करेगा।

अंत में दाऊद और योनातन के लिए एक दूसरे से अलग होने का समय आ गया।

> तब योनातन ने दाऊद से कहा, कुशल से चला जा; ज़्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे। तब वह उठकर चला गया; और योनातन नगर में गया (20:42)।

योनातन नगर में वापस चला गया, उसका मन सज़्बन्ध की अनसुलझी समस्याओं से भारी था। दाऊद ने अपने जीवन के प्रति भयभीत होकर,[33] जंगल की ओर रुख कर लिया।

मित्रता का स्थायित्व
(1 शमूएल 21:1-23:16)

दाऊद पहले तो नोब में गया, जहां तज़्बू था। फिर वह पलिश्तियों के नगर गत में चला गया। पलिश्तियों ने उसे पहचान लिया और वहां से बचकर वह पश्चिमी यहूदा में अदुल्लाम की गुफ़ा में चला गया जहां वह विद्रोही लोगों के एक दल का अगुआ बन गया। वह जहां भी जाता शाऊल उसके पीछे रहता था (1 शमू. 23:14)। अंत में, दाऊद और उसके आदमियों को यहूदा के पहाड़ी क्षेत्र में ''जीप नामक जंगल के होरेश नामक स्थान में'' छिपना पड़ा (23:15)। यहां दाऊद और उसके मित्र की अंतिम मुलाकात होती है।[34]

''शाऊल का पुत्र योनातन उठकर उसके पास होरेश में गया'' (23:16क)। इस पर विचार करें। शाऊल हर जगह दाऊद को ढूंढ़ रहा था लेकिन वह उसे नहीं मिला। परन्तु योनातन ने एक दिन सुबह उठकर मन में कहा, ''मुझ से रहा नहीं जाता। मैं दाऊद को देखना चाहता हूं।'' सो उसने अपना सामान बांधा और ''होरेश में गया।'' मेरे ज़्याल से योनातन के अपने भी जासूस थे और उसने नज़र रखी थी कि दाऊद के साथ ज़्या होता है। उसे खबर रहती थी कि दाऊद इस वज़्त कहां है और कहां जा रहा है।

इसे ही दोस्ती कहते हैं। आप अपने मित्र से मीलों दूर अलग हो सकते हैं, परन्तु उससे लगाव तो रहता ही है। आप एक दूसरे को कार्ड, पत्र आदि भेजते हैं या फोन करते रहते हैं। आप उससे सज़्पर्क बनाए रखते हैं और जानते हैं कि उसके जीवन में कब ज़्या हो रहा है।

उसके आनन्द में आप आनन्दित होते हैं और उसके दुखी होने पर रोते हैं (रोमियों 12:15)। फिर जब आप अधिक देर तक उससे अलग नहीं रह पाते, तो उससे मिलने का, चाहे कुछ देर के लिए ही हो कोई न कोई बहाना ढूंढ़ते हैं।

इस सफ़र में हम योनातन के सामने आने वाले खतरे को नज़रअंदाज नहीं कर सकते। शाऊल ने पहले ही दिखा दिया था कि वह दाऊद से सहानुभूति रखने वाले किसी भी व्यक्ति को मारने में रुकेगा नहीं;[35] और उसने यह भी दिखा भी दिया था कि इसके लिए वह अपने बेटे को मारने से भी नहीं हिचकिचाएगा। योनातन ने दाऊद को देखने के लिए अपना प्राण जोखिम में डाल दिया। दोस्ती इसी का तो नाम है। यीशु ने कहा, ''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (यूहन्ना 15:13)।

मित्रता की दिलेरी
(1 शमूएल 23:16-18)

योनातन दाऊद के पास ज़्यों गया था? मेरा विश्वास है कि उसकी संगति का आनन्द लेने के लिए ही नहीं, परन्तु इससे भी कुछ अधिक। दोस्त दोस्तों की भावनाओं को समझते हैं और योनातन जानता था कि शाऊल द्वारा पकड़े जाने और मारे जाने के भय से हर रोज़ दाऊद कितना निराश होगा। वह दाऊद को *ढाढ़स* देने के लिए गया। ''शाऊल का पुत्र योनातन उठकर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया'' (23:16)। मूल भाषा में, ''ढाढ़स दिलाया'' का मूल अर्थ ''उसके हाथ मज़बूत किए'' है, जो एक इब्रानी लोकोज़्ति है जिसका अर्थ है, ''सहारा देना, अधिक सफल बनाना, हौसला बढ़ाना।''

योनातन ने ''*परमेश्वर की चर्चा करके* [दाऊद को] ढाढ़स दिलाया।'' उसने परमेश्वर की योजनाओं तथा प्रबन्धों के बारे में दाऊद को हिज़्मत दी। उसने दाऊद के साथ अपना यह विश्वास साझा किया कि परमेश्वर उसे विजय दिलाएगा और उसके पिता के सब प्रयास असफल हो जाएंगे: ''मत डर; ज़्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूंगा;[36] और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है'' (23:17; देखें 1 शमू. 24:16-20)।

ऐसे दोस्त बड़े खास होते हैं! आपको अपने आस-पास आशावादी, ऊंचा उठाने वाले और दिलेरी देने वाले लोग देखकर अच्छा नहीं लगता?[37] मित्र ही एक दूसरे को ऊपर उठाते हैं। आज यदि मैं उदास हूंगा तो मेरा मित्र मुझे इस निराशा से निकालेगा। कल को मेरा कोई मित्र निराश हो सकता है और मैं उसे निराशा में से निकालूंगा। मित्रता एक दूसरे की सहायता करने को ही कहते हैं।

निश्चय ही हम में से अधिकतर लोगों को योनातन जैसे मित्रों की आवश्यकता है, जो ''परमेश्वर की चर्चा करके'' हमें ढाढ़स दिलाएं या हमारी हिज़्मत बढ़ाएं, जो हमें प्रजु के विश्वासी रहने के लिए प्रोत्साहन दें (देखें प्रेरितों 10:24)। लेकिन कई ''मित्र'' इसे कठिन बना देते हैं (नोट 2 शमू. 13:3)। ''बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है'' (1 कुरिन्थियों

15:33)। अपने मित्रों का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए! वे आपको यह तय करने में सहायता कर सकते हैं कि आप अनन्तकाल का समय कहां बिताएंगे।

इस समय मायूसी और जुदाई के आंसू हमारी कल्पना के लिए रह गए हैं। योनातन और दाऊद ने अपनी वाचा फिर से दोहराई; ''तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातन अपने घर चला गया'' (1 शमूएल 23:18)। वे दोनों एक दूसरे से फिर कभी न मिलने के लिए अलग हो गए।

मित्रता की पीड़ा
(2 शमूएल 1)

जब आप किसी दूसरे से अपने मन की बात कहते हैं, तो आप अपने आप को असुरक्षित बना लेते हैं। जब आप अपना हृदय पटरी पर रखते हैं, तो वह पिस सकता है। परन्तु इसका एक मात्र विकल्प अपने हृदय को घुटन और धूल भरी जगह में ताला लगाकर रख छोड़ना है जहां यह दम घुटकर मर जाए। आपके मन को पीड़ा तो महसूस नहीं होगी, परन्तु इसे प्रसन्नता का पता भी नहीं चलेगा। अपना जीवन किसी दूसरे को दे दें; जीने का यही एकमात्र ढंग है।

दाऊद और योनातन के आंसू हमने देख लिए हैं; जुदाई की उनकी पीड़ा भी हमने महसूस की है। योनातन और दाऊद की कड़वी मीठी मित्रता के अंतिम अध्याय पीड़ादायक दृश्य हैं।

दाऊद और उसके आदमी अमालेकियों से युद्ध करके हटे ही थे कि उन्हें इस्राएलियों और पलिश्तियों के बीच खतरनाक युद्ध की खबर मिली। भयभीत होकर दाऊद ने खबर लाने वाले से कहा, ''वहां ज़्या बात हुई?'' (1:4क)।

उस जवान की बात कि ''लोग रणभूमि छोड़कर भाग गए, और बहुत लोग मारे गए; और शाऊल और उसका पुत्र योनातन भी मारे गए हैं'' (1:4ख) दाऊद के दिल में खंजर की तरह लगी।

दाऊद यह विश्वास नहीं करना चाहता था (1:5)। परन्तु उस आदमी के आंखों देखा हाल सुनाने से उसे पता चल गया कि उसका मित्र नहीं रहा है।

> तब दाऊद ने अपने कपड़े पकड़कर फाड़े; और जितने पुरुष उसके संग थे उन्होंने भी वैसा ही किया; और वे शाऊल, और उसके पुत्र योनातन, और यहोवा की प्रजा, और इस्राएल के घराने के लिए छाती पीटने और रोने लगे, और सांझ तक कुछ न खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे (1:11, 12)।

दाऊद ने उस समय एक शोक गीत लिखा जो 1:19-27 में मिलता है। इस विलाप में शाऊल और दोनों का उल्लेख है, परन्तु दाऊद का प्रमुख उद्देश्य इसके शीर्षक ''धनुष का गीत'' में ही मिलता है (1:18)। धनुष योनातन की पहचान थी न कि शाऊल की। दोस्तों को समर्पित संगमरमर तथा पत्थर के तो कई स्मारक मिल जाएंगे। परन्तु योनातन के लिए

दाऊद की श्रद्धांजलि की मिसाल मिलनी कठिन है।

गीत में, दाऊद ने योनातन और उसके पिता के सैनिक कौशल को याद किया है (1:22)। अपने पिता के प्रति विश्वास तथा वफ़ादारी के लिए उसने योनातन की प्रशंसा की (1:23)। परन्तु सबसे बढ़कर दाऊद ने अपने हुए नुज़्सान का गीत लिखा है:

> हाय, युद्ध के बीच शूरवीर कैसे काम आए!
> हे योनातन, हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए, हे मेरे भाई योनातन,
> मैं तेरे कारण दु:खित हूं;
> तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था;
> तेरा प्रेम मुझ पर अद्‌भुत,
> वरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था।[38]
> हाय, शूरवीर ज़्योंकर गिर गए, ...! (1:25-27)।

हां, जब आपकी दोस्ती किसी से इतनी गहरी हो जाती है तो दर्द के द्वार खुल ही जाते हैं। परन्तु ध्यान दें कि दाऊद ने योनातन के साथ दिल टूट जाने के कारण अपनी दोस्ती पर अफ़सोस नहीं किया। बल्कि उसने मित्रता को स्मरण किया और अपने मन में कीमती यादें संजोकर रखीं। मैं फिर कहता हूं, जीने का यही एकमात्र तरीका है।

सारांश

यह पाठ मित्रता को एक श्रद्धांजलि है, परन्तु मेरी आशा है कि यह इससे भी बढ़कर है। मेरी प्रार्थना है कि यह हम सब के लिए एक चुनौती हो।

कई साल पहले, मैंने एक प्रचारक की कहानी सुनी थी जो नगर के निर्धन क्षेत्र को देखने के लिए गया था। उस घर से बाहर निकलते हुए जहां वह गया था, उसे उसकी नई कार को निहारते हुए फटे कपड़े पहने एक छोटा लड़का मिला। ''साहब, यह कार होती है!'' लड़के ने कहा। यह सोचकर कि इसे समझाना ज़रूरी है, प्रचारक ने उज़र दिया, ''मैं ऐसी कार नहीं खरीद सकता था, लेकिन मेरा एक दोस्त कारों का डीलर है उसने मुझे यह कार दी है ताकि मैं सेवा का कार्य कर सकूं।'' लड़के ने कुछ देर के लिए सोचा, फिर कहा, ''काश मैं भी ऐसा दोस्त होता।''

पहली बार यह कहानी सुनने पर, मुझे यह लगा था कि लड़के का उज़र होगा, ''काश *मेरा* भी ऐसा कोई दोस्त होता।'' मुझ पर ''काश मैं भी ऐसा दोस्त *होता*'' शज़्दों का बड़ा प्रभाव हुआ।

हो सकता है ''वचनबद्धता,'' ''नि:स्वार्थतता,'' ''आने वाली परीक्षा का सामना करने की क्षमता,'' ''निष्कपटता,'' ''स्थिरता,'' और ''ढाढ़स'' जैसे शज़्दों के साथ मित्रता की मेरी व्याज़्या से हमें लगे कि ''काश मेरा कोई ऐसा दोस्त होता।'' यदि ऐसा है, तो आइए अपनी सोच को ''काश मैं ऐसा दोस्त होता'' में बदल दें।

इस पाठ के आरज़्भ में, मैंने एक आशा जताई थी कि यह पाठ पाठक के लिए

सहायक होगा और *विशेष रूप से* उन लोगों के लिए सहायक होगा जो अपने आप को मित्रहीन मानते हैं। मुझे दो बातें कहनी हैं: पहली, यदि आपका कोई मित्र नहीं है, तो कोई ऐसा आदमी ढूंढें जिसे मित्र की *आवश्यकता* हो और ऐसे मित्र *बन* जाएं जिसकी बात हमने अभी की है। आज भी यह सत्य है कि ''जिसके मित्र हों उसे मित्रतापूर्वक व्यवहार दिखाना चाहिए।''[39]

दूसरा (और अधिक महत्वपूर्ण), याद रखें कि हम में से हर एक ऐसा मित्र हो सकता है जिसमें वे सब गुण हैं जिनका अभी हमने वर्णन किया है, जिसे ''महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र'' (मत्ती 11:19; लूका 7:34) कहा जाता है, जो अपने मानने वालों को ''मित्र'' कहकर पुकारता है (लूका 12:4; यूहन्ना 15:15)। ज़्या वह आपका मित्र है? याद रखें कि उसने कहा है, ''जो कुछ मैं तुझ्हें आज्ञा देता हूं, *यदि* उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो'' (यूहन्ना 15:14)। और चाहे कितने भी मित्र हों या न, लेकिन इस मित्र का होना *ज़रूरी* है!

विज़ुअल-एड नोट्स

पूरे पाठ में एक बड़े बोर्ड पर ''मित्रता'' शब्द लिखकर रखना लाभकारी होगा। यदि इसे विस्तार देना पड़े, तो बड़े अक्षरों वाला एक चार्ट बना लें:

मित्रता का/की
[ ]

फिर पाठ के मुख्य प्वाइंट्स के लिए खाली स्थान में एक-एक करके ''**समर्पण,**'' ''**निःस्वार्थतता,**'' ''**परीक्षा,**'' ''निष्कपटता,'' ''**स्थायित्व,**'' ''**ढाढ़स,**'' ''**पीड़ा**'' लिखे कार्ड लगाएं।

टिप्पणियां

[1]बाइबल के हवालों के अलावा, इस पहले भाग में फ्रेंक क्रेन, *ए फ्रेंड लाइक यू* (हार्टलैंड सैल्फ्लर्स, Inc., 1991), डिवोशनल कैलेंडर से लिए गए हैं। [2]हाल ही में बाज़ार में आई एक किताब *द फ्रेंडलैस अमेरिकन मेल।* [3]प्रश्न उठता है कि यदि दाऊद शाऊल के लिए वीणा बजाता था तो शाऊल को यह पता ज़्यों नहीं था कि दाऊद कौन है (तु. 1 शमूएल 16:23; 17:15)। बहुत सी व्याख्याएं दी जा सकती हैं। दाऊद को शाऊल के लिए बजाते हुए कुछ समय बीत चुका होगा। जिस दौरान दाऊद का रूप भी बदला होगा। (बाद में उसे दाढ़ी आने की बात कही गई है-1 शमूएल 21:13; हो सकता है कि तब उसे दाढ़ी आनी शुरू ही हुई हो।) ज़्योंकि शाऊल कभी-कभी खोया-खोया रहता था इसलिए हो सकता है कि उसकी याददाश्त कम हो गई हो। परन्तु सबसे सही व्याख्या पाठ के मुख्य भाग में दी गई है कि शाऊल ने यह नहीं पूछा कि दाऊद कौन है बल्कि उसने पूछा कि उसके पिता का ज़्या नाम है जो उसे महल में लाने की तैयारी के लिए कदम था। [4]शाऊल ने पहले सुना हुआ था कि दाऊद का पिता कौन है (1 शमूएल 16:18-22)। परन्तु लोगों के नाम भूल जाने की समस्या के

कारण (विशेषकर जिन्हें मैं कभी-कभी मिलता हूं), मैं समझ सकता हूं कि शाऊल को भूल गया होगा। [5]यह वहां हो *सकता* है जहां ''शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा कि दाऊद को मेरे साज़्हने उपस्थित रहने दे, ज़्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं'' (1 शमूएल 16:22)। [6]योनातन का अर्थ है ''यहोवा ने दिया है।'' [7]ध्यान दें कि दाऊद अपने आप को योनातन का ''दास'' ही कहता है (1 शमूएल 20:8)। [8]1 शमूएल 20:23 देखें। यह भी ध्यान दें कि इसे ''*यहोवा की* ... वाचा'' कहा गया है (1 शमूएल 20:8)। [9]नोट 1 शमूएल 13:22- यद्यपि यह माना जाता है कि पलिश्तियों पर बाद की अपनी विजयों में इस्राएलियों ने कुछ तलवारें उठाई होंगी ज़्योंकि बाद में दाऊद और उसके आदमियों के पास चार सौ तलवारें थीं (1 शमूएल 25:13)। [10]योनातन के ऐसा करने के वर्णन के लिए हम ''उसने अपनी कमीज उतारकर दे दी'' अभिव्यज़्ति का इस्तेमाल करते हैं।

[11]योनातन ने दाऊद को वस्तुएं दीं; दाऊद ने जिसके पास कुछ और देने को नहीं था, अपना आप ही दे दिया। [12]जेज़्स बर्टन कॉ़फ़मैन, *कमैंट्री ऑन फर्स्ट सैमूएल* (अबिलेन, टैज़्सस: ACU प्रैस, 1992), 215. [13]जो कुछ भी दाऊद ने किया था उससे शाऊल का ही नाम होना था। [14]योनातन के प्रश्न में अनकहा, परन्तु समझ आने वाला तर्क था। यदि शाऊल बिना कारण दाऊद को मार देता तो पूरे राज्य में बेचैनी फैल जानी थी। किसी ने अपने आप को सुरक्षित नहीं मानना था। [15]कुछ लोग वाचा बांधने में शाऊल की गंभीरता पर प्रश्न उठाते हैं। [16]अगला पाठ ''बुरे वज़्त में कैसे कायम रहें'' देखें। [17]बाइबल कहती है कि शाऊल ''भी ... शमूएल के सामने नबूवत करने लगा'' (1 शमूएल 19:24)। परन्तु ''नबूवत करने लगा'' शज़्द का नकारात्मक अर्थ में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। मूल में इसी शज़्द का अनुवाद 1 शमूएल 18:10 में किया गया है और NASB में इसका अनुवाद ''raved'' किया गया है जिसका अर्थ ''बेहोशी में बोलना'' है; ''he raved in the midst of the house.'' नबायोत में चौबीस घंटे ''नंगा पड़ा'' रहकर शाऊल ने ज़्या किया होगा स्पष्ट नहीं है। [18]योजना का उद्देश्य अपने मन में यह स्पष्ट करना था कि वह शाऊल के साथ कहां तक था। हो सकता है कि उसके जीवन पर इन प्रयासों के कारण ही शाऊल को अस्थाई रूप से पागलपन का दौरा पड़ता हो और यह वास्तव में शाऊल की तर्कसंगत भावनाओं को न दिखाता हो। शायद वह फिर शाऊल द्वारा उसे मारने की कोशिश करने से पहले की तरह फिर से राजा के साथ मिल जाए (ज़्योंकि शाऊल को नया चांद आने के समय दाऊद के आने की उज़्मीद थी [1 शमूएल 20:26, 27], ऐसा लगता है कि शाऊल ने ''पागलपन के दौरे का बहाना'' बनाने की योजना की थी)। [19]दाऊद के जीवन का अध्ययन करते हुए हम उसमें झूठ तथा अन्य बेइमानियों को देखेंगे। इससे हमें यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि परमेश्वर झूठ को स्वीकृत करता है। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक वही लिख रहे थे जो कुछ हुआ था अर्थात वे किसी बात पर पर्दा नहीं डाल रहे थे। [20]योनातन ने कहा, ''यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे *जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा।*'' योनातन राजा के रूप में अपने पिता के ठुकराए जाने से पहले के उसके शासन के प्रारज़्भिक दिनों में यहोवा के उसके साथ होने की बात कर रहा था।

[21]अफ़सोस, दाऊद के राजा बनने के समय योनातन जीवित नहीं था। [22]सिंहासन पर बैठते ही अपने शज़्तिशाली विरोधियों को खत्म कर देना राजाओं के लिए आम बात थी। [23]बिनती में योनातन ने अपने ''घराने'' का नाम भी शामिल किया था। बाद में उसके पुत्र को सज़्मान देकर (2 शमूएल 9:7) और उसका प्राण बज़्श कर (2 शमूएल 21:7) दाऊद ने योनातन के साथ अपनी शपथ पूरी की थी। [24]औपचारिक या शारीरिक अशुद्धि इस्राएलियों को किसी धार्मिक पर्व में भाग लेने से रोकती थी (लैव्यव्यवस्था 7:20, 21)। [25]''के पुत्र'' एक इब्रानी लोकोज़्ति है जिसका अर्थ ''के स्वभाव वाला'' है। इस अभिव्यज़्ति का मूल अर्थ ''हे दुष्ट विद्रोही'' है। परन्तु यह इससे भी अधिक अपमानजनक था। इसकी तुलना आज की उस गाली से की जा सकती है जिसका मूल अर्थ तो ''कुतिया के पुत्र'' है, परन्तु सबसे अधिक अपमानजनक है। [26]सप्तति अनुवाद में ''तुम लोग मित्र जो हो'' है (देखें NEB)। NIV का अनुवाद है, ''तुम उसकी ओर के हो।'' [27]ज़्योंकि योनातन के जन्म के समय उसकी मां का नंगेज दिख गया था, इसलिए इस अभिव्यज़्ति का अर्थ हो सकता है, ''तेरी मां शर्मिंदा है कि उसने तुझे जन्म दिया।'' या इसका संकेत इस तथ्य की ओर हो सकता है कि गद्दी से उतरे राजा की पत्नियां उसके उज़राधिकारी की पत्नियां बन गईं (देखें 2 शमूएल 12:18)। [28]पहला शमूएल 20:34 कहता है कि योनातन का मन भोजन करने को न किया। [29]निश्चय ही यदि योनातन ने प्रमाण देख लिया था कि कोई देख रहा है, तो वह उस दास के साथ नगर को लौट गया होगा ताकि दाऊद खतरे में न पड़े, और हमें दिल दहला

देने वाला अगला दृश्य न मिलता।[30]पहला शमूएल 20:41 में टिप्पणी है कि दाऊद ने ''तीन बार दण्डवत की।'' यह राजा के पुत्र के रूप में योनातन के आदर के लिए (देखें 1 शमूएल 24:8) या परमेश्वर के प्रति सम्मान के कारण (''परमेश्वर की इच्छा पूरी हो'')-या दोनों उद्देश्यों के लिए हो सकता है।

[31]उस समय गाल पर चुम्बन अभिवादन का ढंग था, जैसा कि आज भी संसार के कई भागों में पाया जाता है। [32]फ्रैंक क्रेन, *ए फ्रेंड लाइक यू* (हार्टलैंड सैम्पलर्स, Inc., 1991), डिवोशनल कैलेंडर। [33]1 शमूएल 23:17; 27:1; आदि पर ध्यान दें। कई आयतों से यह संकेत मिलता है कि दाऊद भाग गया क्योंकि उसे अपनी जान का खतरा था। दोनों बातें आपस में मेल खाती हैं।[34]क्योंकि दाऊद का पीछा करने में योनातन ने बिल्कुल भाग नहीं लिया इसलिए अध्याय 20 के अंत से अध्याय 23 में इस दृश्य तक उसका कोई उल्लेख नहीं है। [35]नोब में शाऊल ने याजकों को मरवा डाला था क्योंकि उन्होंने दाऊद की सहायता की थी। [36]''मैं तेरे नीचे हूंगा'' वाक्यांश बिनती नहीं बल्कि एक प्रतिज्ञा है। योनातन ने दाऊद से प्रतिज्ञा की कि वह उससे छोटा पद लेकर संतुष्ट होगा और हर हाल में उसका समर्थन करता रहेगा। अफ़सोस कि योनातन को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का अवसर नहीं मिल पाया।[37]सभोपदेशक 4:9-12 में उपदेशक ने हमें दूसरों से मिलने वाली सामर्थ की बात की है।[38]कुछ लोगों ने, यह सिद्ध करने की इच्छा से कि परमेश्वर समलैंगिकता को स्वीकृति देता है, इस पद का इस्तेमाल यह ''साबित'' करने के लिए किया है कि दाऊद और योनातन समलैंगिक प्रेमी थे। परन्तु दाऊद योनातन के नि:स्वार्थ प्रेम की बात करता है, न कि उस प्रेम के कामुक होने की।[39]नीतिवचन 18:24. इस पद से कुछ कठिनाइयां हैं। बहुत से आधुनिक अनुवादक इसका अनुवाद बहुत ही अलग करते हैं। यह पवित्र शास्त्र का भाग हो या परम्परा, मैंने इसे एक सच्ची कहावत के रूप में शामिल किया है।